तस्वीर

फा० फ्रांसिस डेविड कुल्लू, ये० स०

"क्या बात है अभिजीत? बड़ा उदास लगते हो आज कल? कहीं कुछ चक्कर-उक्कर है क्या?" "नहीं अनुप! बस परिवार में दु:खों का.." "अरे, सॉरी अभिजीत! मुझे नहीं पता था। खैर, गम को भुलाने के लिए कुछ हो जाय। चलो फिल्म देखने चलते हैं। सब ठीक हो जाएगा।" अनुप ने प्रस्ताव रखा। "फिल्म! अरे यार! इस बार जी नहीं कर रहा है। तुम जाओ।" अभिजीत ने असहमति जता दी। अभिजीत को गहरा सदमा लगा था। दो माह पहले पिता पुलिस की नौकरी करते उग्रवादियों के हत्थे चढ़ गए। फिर शोक संताप में डूबी दादी माँ चल बसी। पिता के शहीद हो जाने पर सरकारी घोषणाएँ हुईं पर सब अधर पर लटक गया। अब परिवार में बचा क्या था? विध वा माँ और अपनी छोटी बहन जीता। गाँव से लोयोला हॉस्टेल आये अभी सप्ताह भर हो गए। लेकिन अभिजीत को किसी चीज में मन नहीं लग रहा था। पूरे जोश और उमंग से लबरेज अभिजीत के जीवन में दु:ख का मातम छाया था। अपने दोस्तों से भी वह कटा-कटा-सा रहा करता था। आज जब उसके दोस्त फिल्म का आनंद ले रहे थे, अभिजीत अपने रूम में ही अकेला रह गया। पढ़ाई और अपने संगी-साथियों से मन उचटकर वह अतीत में खो गया। रह-रह कर उसे अपने परिवार की याद आने लगी। वह अपने कमरे में बैठा तो था लेकिन उसका मन और दिल वापस अपने गाँव में था।

दादी माँ की अंतिम क्रिया के बाद, जब वह राँची आ रहा था, उसकी माँ ने उसे अश्रूपूर्ण नयनों से विदा किया था। उसे मात्र यही हिदायत दी थी - "बेटा, जो भी करना अपना और अपनी बहन का ख्याल जरूर रखना।" माँ कुछ पढ़ी-लिखी नहीं थी। लेकिन परिवार में बच्चों की परवरिश करना खूब अच्छी तरह जानती थी। जीता के पिता तो झारखण्ड पुलिस की नौकरी में सैकड़ों जगह नियुक्त हुए थे। हमेशा घर से बाहर रहते थे। फिर भी अक्सर वह पत्राचार के द्वारा परिवार से जुड़े रहते थे। अभिजीत के नाम उसके अनगिनत पत्र आये। फोटोग्राफी का शौक भी था उसका। जब कभी घर आता, साथ में कैमरा लाता और गाँव-परिवार की ढेर सारी तस्वीर उतार ले जाता था। उन्हीं तस्वीरों में एक प्यारी सी तस्वीर थी। तस्वीर उनके बचपन की थी। उनकी दादी माँ जमीन पर पैर पसारे बैठी हैं। "मैं! मैं" करते अभिजीत और जीता अपनी दादी माँ की गोद में बैठने की जिद्द कर रहे थे। उनकी माँ लकड़ी से बने दरवाजे की चौखट पर हाथ रखे उनकी रट देख रही थी। इस सुंदर प्रेमपूर्ण और कौतुहल भरे पल को कैमरे में कैद कर लिया था उनके पापा ने। इस तस्वीर को देखकर अभिजीत और ही भावुक हो जाता है। उसे विश्वास ही नहीं होता है कि परिवार की तस्वीर उतारने वाला आज उसका पिता इस दुनिया में नहीं है। परिवार में प्रेम का पाठ पढ़ाने वाली दादी माँ से भी वह बिछुड़ गया है। प्रियजनों की मृत्यु से सब आहत होते हैं। लेकिन शोक की सीमा लांघने के लिए प्रियजनों के प्रेम, सेवा और त्याग ही स्मृति बन कर हमारे काम आते हैं। मृत्यु से परे जो इन स्मृतियों को समझ पाते हैं वे शोक की हर सीमा पार कर पाते हैं। ये स्मृतियाँ फिल्म हॉल में चल रहे किसी चलचित्र से कम न होते। अच्छा किया कि अभिजीत फिल्म देखने नहीं गया और एकांत में इन चीजों को भली-भांति समझ पाया। अब वह नादान न था। पिता और दादी माँ के गुजर जाने के बाद अभिजीत जिम्मेदारी लेने के काबिल हो गया था। इसलिए वह गम की सीमाओं को लांघने के लिए हर लुभावने तरीकों के चक्र में कभी नहीं पड़ा। अतीत की ये मधुर स्मृतियाँ उसे गमगीन कम और प्रोत्साहित ज्यादा करती थीं। वह दुगुने जोश के साथ प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करने लगा।

उधर गाँव में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा था। विधवा माँ घर की सौ चिंताओं में डूबी रहती थी। बाप और दादी माँ की छत्रच्छाया जो उठ गयी समझें या फिर जवानी का परवान, जीता में गजब का परिवर्तन आने लगा था। दादी माँ के गुजर जाने से परिवार का आंगन सूना हो गया था। जीता अक्सर अकेली पड़ जाती थी। परिवार में प्रेम और भावना-सूत्र टूटने लगा था। जीता परिवार से बाहर प्रेमांध की हवा में बहने लगी थी। इसी की झलक जीता के जीवन में दिखने लगा था।

माँ द्वारा अभिजीत को इस पवितर्न की खबर लग गयी। वह परिवार को टूटने से बचाने की युक्ति खोजने लगा। क्या करे वह? डाँट-डपट करे या प्यार से समझाये? वह उसे प्यार से ही समझाना मुनासिब समझा। उसने उसे एक खत लिख दिया और खत में एक बचपन की एक तस्वीर भी चिपका दी।

प्यारी जीता,

तुमको मेरा प्यार!

पिता और दादी माँ के इस तरह एक के बाद एक चले जाने से परिवार में दु:ख का पहाड़ टूट गया है। मुझे मालूम है कि पितृ शोक में तुम डूब गयी हो। दादी माँ की अनुपिस्थति से घर का आंगन सूना लग रहा होगा। ऐसा लग रहा होगा कि अब तो हमारा कोई नहीं है। लेकिन जीता, मम्मी-पापा और दादी माँ के अथक प्रयास से जो संस्कार हमने पाया है उसी से अब हम अपना जीवन सँवरेंगे। परिवार में प्रेम का अभाव पैदा होने न देंगे और न ही बिखरने। तुम मेरी अच्छी बहन हो और तुम्हारे प्रति मेरा अपार स्नेह है। बचपन की वह घटना अब भी याद है मुझे जब माँ ने अपशब्द कहने के दण्डस्वरूप मुझे ठीक चौराहे के पास खूँटें में बाँध दिया था। वहाँ से गुजरने वाले सब मेरी खिल्ली उड़ाया करते थे। पापा भी आये हुए थे और उसने उसी हालत में मेरी एक तस्वीर खींच ली थी। ये वही तस्वीर है। लेकिन इसी तस्वीर ने मेरे जीवन की लकीर बदल दी है। और हाँ जौभी की तुम इस तस्वीर में नहीं हो। दुवा है कि जीवन में तुम्हारी ऐसी तस्वीर बने ही नहीं। याद है तुम माँ के पास जाकर उछल-उछल कर कह रही थी - "बस माँ! हो गया, भैया को अब ज्यादा और अपमानित न करो।" तुम्हारी उस मिन्नत में तुम्हारा प्यार झलकता है और मैं उसकी कद्र करता हूँ।

सच में जीता, अगर प्रेम है तो दूरियाँ भी रिश्तों में नजदीकियाँ लाती हैं। मगर प्रेम के अभाव में नजदीकियाँ ही रिश्तों में दूरियाँ पैदा कर देती हैं। प्रेम विश्वास से बढ़कर है। विश्वास रिश्तों की नींव है पर सच्चे प्रेम के अभाव में हर रिश्तों की नींव हिल जाती है। प्रेम के अभाव में ही परिवार बिखरने लगता है। हम भाई-बहन भटकने लगते हैं। माँ मुझे तुम्हारे बारे बता रही थी। तुमसे मेरी कोई शिकायत तो नहीं है। मेरा तुम पर पूरा विश्वास है। जो मानव-मूल्य और जीवन-संस्कार मैंने परिवार में पाया है वही तुमने भी पाया है। मम्मी-पापा और दादी माँ ने हमारे छोटे परिवार को प्रेम और भावना

के एक-सूत्र में बाँधा है ख्याल करो कि वह टूटने न पाये। मुझे पूरा विश्वास है कि अंगड़ाई लेती जवानी के जोश में तुम कभी अपना होश नहीं खो बैठोगी और न ही परिवार से बाहर झूठे प्रेम की तलाश। मर्यादा की सीमा लांघकर प्रेम की तलाश करना मात्र धोखा है। बस, परिवार में ही प्रेम प्रस्फुटित और विकसित होने देना।

बस, इस बार के लिए इतना ही लिखता हूँ। माँ का विशेष ख्याल रखना। सस्नेह!

तुम्हारा भाई

अभिजीत

जिन्दगी की वह उम्र जब इंसान को मुहब्बत की सबसे अधिक जरूरत होती है वह बचपन है। उस वक्त पौधे को नमी मिल जाय तो जिंदगी भर के लिए उसकी जड़ें मजबूत हो जाती हैं। उस वक्त खुराक न पाकर उसकी जिंदगी खुश्क हो जाती है। परिवार में ही ये खुराक नसीब होती है। मम्मी-पापा और दादी माँ के बाद भाई अभिजीत की समझदारी ने समय रहते विकट परिस्थिति में एक परिवार को उजड़ने से बचा लिया। एक समझदार स्नेहपूर्ण भाई के मार्गदर्शन से जीता के जीवन की जड़ें मजबूत हो गयीं। ■